शकुंतला अग्रवाल'शकुन'

छप्पय छंद

1

दीपक जला कुम्हार,चाक फेरे रोजाना।
खूब करे मनुहार,रमा जी निज-घर आना।
रूखा-सूखा भोग,ग्रहण कर लेना माता।
बने सुखद-संयोग,सदा तेरे गुण-गाता।
ऐसी करना माँ कृपा,हो जगमग दीपावली।
माँ तेरे आशीष से,खिलती खुशियों की कली।

2

कर दौलत से प्यार,एक दिन सब पछ्ताते।
पाते कष्ट अपार,द्वार ईश्वर के जाते।
रोज करें विष-पान,तिजोरी में भर पैसे।
विपद पड़ी है आन,पार पाएँ अब कैसे?
मतलब का संसार यह,चलना सत की राह पे।
होते क्यों मगरूर तुम,जग की झूठी वाह पे।

3

ईर्ष्या घातक रोग,चाटता दीमक बनके।
कैसे बने सुयोग?सभी चलते हैं तन के।
उर में लेता झाँक,जिंदगी उसकी झूमे।
मत दुनिया को हाँक,तभी सुख चौखट चूमे।
मन में उपजे खीझ जब,अपनों के व्यवहार से।
ऐसा बोना बीज तब,रिश्ते महके प्यार से।

4

सुनलो हे!भगवान,नहीं भाती है दुनिया।
करके विष का पान,फूट कर रोती मुनिया।
मनुज बना हैवान,नोच लेता है बोटी।
राख हुए अरमान,दुबक के बैठी छोटी।
कभी कटे वो कोख में,कभी कोख कटती यहाँ।
भगवन!बतलाओ मुझे,सुता सुरक्षित है कहाँ?

5

दुख में भी दे साथ,वही सच्चा है यारा।
थामे अपना हाथ,वही आँखों का तारा।
जिसके मन में दर्द,जगाती पीर-पराई।
अपने गम को भूल,उसी ने प्रीति- लुटाई।
भगवन देते हैं उसे,अपना आशीर्वाद भी।
बिन बोले ही पूर्ण हो,उसकी तो फरियाद भी।

6

एक अकेला दीप,चीर देता अँधियारा।
तम का अंत समीप,दिवा लाएँ उजियारा।
मत रख कोई आस,स्वार्थ के रिश्ते-नाते।
सब बन जाते खास,हाथ में दौलत आते।
फूँक-फूँक यदि पग रखो,मात न खाओगे कभी।
प्रेमिल- शीतल- छाँव भी,हर-दिन पाओगे तभी।